Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चित्रा मुद्गल के साहित्य में अभिव्यक्त जीवन-कथा

प्रकाश वारकले*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

चित्रा मुद्गल का जीवन परिचय – समकालीन हिन्दी साहित्य की सशक्त लेखिका एवं मानवीय संवेदनाओं की धनी ने अपनी सजीव एवं ईमानदार अभिव्यक्ति के रूप में भरपूर साहित्य सृजन किया। अपने लेखन में उन्होंने अपने सामाजिक और नैतिक मूल्यों की बड़ी गहराई से अपनी समझ प्रस्तुत की है। अपने समाज में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को बड़ी निष्ठा से प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने समाज में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को, खासतौर से मध्यम वर्गीय और निम्नवर्गीय अनुभवो को अपनी रचनाओं के द्वारा समृद्ध किया है। समाज की निष्ठावान लेखिका चित्रा मुद्गल ने स्त्रियों के संगठन से जुड़कर काम किया। जिससे उनका अनुभव अत्यधिक परिपक्व हुआ। उन्होंने झोपड़ी पट्टी में निवासरत श्रमिक पुरुषों और महिलाओं में चेतना पैदा की।

चित्रा मुद्गल ने महानगरीय जीवन के निम्न और मध्यवर्गीय नारी चरित्रों का, उनके अन्तर्द्वंद्वों सहित विश्लेषित किया है। उन्होंने अपनी जीवन दृष्टि के रूप में अनुभव किया कि समाज में कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाएँ अपने सहयोग से कार्य करने की अपेक्षा आपसी प्रतिद्वंद्विता तथा अपराधी गिरोह की ठेकेदारी को भी काफी निकटता से अनुभव किया है। उनकी रचनाओं में समाज के शोषित, पीड़ित, पद-दलित और विशेष रूप से नारी की दुर्दशाग्रस्त स्थितियों को तमाम बेबसी और दर्द के साथ अभिव्यक्त किया है।

उनकी अनेक कहानियों में ग्रामीण विधवा स्त्री की व्यथा, निम्नवर्ग की पारिवारिक समस्याएँ तथा दुर्घटनाग्रस्त अपाहिज नारी की दशा का चित्रण किया है।

चित्रा जी की लघुकथाओं में जिन विषयों को छुआ है उसमें 'चीखें' काफी दमदार अभिव्यक्ति का उदाहरण है।

चित्रा मुद्गल की अनेक कहानियों में नारी के दुर्दान्त संघर्ष का चित्रण देखने को मिलता है।

वर्तमान समाज में आर्थिक विषमता के कारण, सामाजिक मल्यों में परिवर्तन के कारण भभी आम आदमी का जीवन अधिक तनावग्रस्त रहने लगा है। किन्तु इन सब कारणों में वर्तमान नारी को ही काफी संघर्ष झेलना पड़ रहा है।

चित्रा मुद्गल की कहानियों में 'शून्य', 'अग्निरेखा', 'प्रमोशन' आदि कहानियों में दाम्पत्य जीवन से उत्पन्न तनाव से ग्रस्त पात्रों का रेखांकन किया गया है।

श्रीमती प्रविता लक्ष्मी ने चित्राजी के कथा साहित्य में युगबोध' की व्याख्या की गई है जिनमें यथार्थबोध के दृष्किोण को अहम् माना गया है। स्त्री-पुरुष संबंधों में परिस्थितिजन्य बदलाव, का संबंधी दृष्टि, महानगरी शोषित जीवन की प्रवृत्तियों और मानवी मूल्यों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण विशेष रूप से प्रभावशाली रूप में चित्रित किया गया है।

वस्तुत: मानवीय संबंधों में परिवर्तन, वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश के प्रति जागरूकता आदि की चर्चा की है। उनके 'भावबोध' की दिशा यमें मध्यवर्ग की हताशा और विवशता को उतारा हैए तो दूसरी ओर व्यक्तियों की महत्वाकांक्षाओं को भी उभारा है। वस्तुत: मध्यमवर्गीय आदमी सहसा हिंसा पर उतारू नहीं होता, वह हमेशा अपनी परिस्थितियों में सामंजस्य पैदा करने की और प्रवृत्त रहता है। इस प्रकार मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपने आप में सज्जन बने रहने में अधिक विश्वास करता है।

वर्तमान स्थितियों में अनेक राजनैतिक परिवर्तन हुए है। दिनोंदिन पूंजीवादी सभ्यता का विस्तार हो रहा है। जिससे महानगरी जीवन में अनेक जटिलता पैदा हुई है। जैसे यांत्रिकता, कृत्रिमता, संवेदनशीलता और निर्मम तटस्थता का वातावरण प्रस्तुत कहानियों में उभर कर आया है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल कहते है कि-'शहरी जीवन में जितनी भूख शरीर की हैए उतनी ही अर्थ की भी है। सेक्स और अर्थ दोनों ही भौतिक मूल्यों के अन्तर्गत आते है। आज के युग में समाज का वातावरण तेजी से बदल रहा है।' अनेक कहानियों में पाश्चात्य प्रवृत्तियों का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। फैशन, चमक, दमक, यौन भावनाओं की प्रति बढ़ता हुआ आकर्षण आदि सब कुछ चित्राजी के भाव लोक में दृष्टिगत हो रहा है।

आधुनिकता के नाम पर साहित्य में दमित वासनाओं और यौन कुंठाओं का बोलबाला दिखाई दे रहा है।

आज के भौतिकवादी युग में अकेलेपन की भावना का बोध गहराई से महसूस हो रहा है। समाज दिनोंदिन विक्रति की ओर बढ़ने लगा है जिनमें नशीले पदार्थों का सेवन, उन्मुक्त प्रेम की स्थितिए जो विक्रत काम वासनाओं की ओर अग्रेषित हो रही है, फलत: समाज में तलाक जैसी विसंगतियां बढ़ने लगी है।

श्रीमती मधु सारस्वत की दृष्टि से साठोत्तरी कहानियों में नारी की वर्तमान दशा का चित्रण किया है। इनके साथ ही अनेक प्रथित यश लेखिकाओं के चिंतन के प्रभावों को भी व्यक्त किया गया हऐ जिनमें विशेष रूप से मृणाल पाण्डे, मेहरून्निसा परवेज, ममता कालियाँ, चंद्रकांता, मैत्रेयी पुष्पा आदि लेखिकाओं ने वर्तमान नारी की स्थितियों का व्यापक चिन्तन किया है। 'प्रेतयोनि' में नीतू हबशी टैक्सी वाले की कामवासना का शिकार होते-होते

बची है। इस प्रकार मध्मयवर्गीय मानसिकता में पिसती नारी की अवस्था को रेखांकित किया है। 'सुख' कहानी में नौकरीपेशा नारी घर और नौकरी को संभालने में एक मशीनी यंत्र बन जाती है। जिसे जीवन में 'सुख' की कल्पना दुरूह होती है।

आज मध्यमवर्गीय नारी स्व-अस्तित्व का निर्माण करने के लिए आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना चाहती है इसलिए घर परिवार के बाहर रह कर नौकरी भी कर रही है। फलत: वह न तो घरएपरिवार तथा नौकरी को भी अच्छी तरह से नहीं संभाल पाती है।

वर्तमान कहानियों में युगीन यथार्थ की अवधारणा – साहित्य में समाज की स्थिति के अनुसार परिवर्तन होते रहते है जिनमें मूलत: सामाजिक मान्यताओं में फेरबदल होना स्वाभाविक है। कहानियों में किरदार, वेशभूषा, खान-पान, उपमा, प्रतिमान, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि युग के अनुकूल जानकारी प्राप्त की जाती है। इस प्रकार कहानियाँ एक विशेष समय में लिखी गई उस समय की यथार्थ जानकारी प्राप्त करने के लिए सशक्त माध्यम की जरूरत होती है।

ग्राम्य जीवन में पशुपालन मुख्य जीविकोपार्जन के रूप में यथार्थ स्थिति का चित्रण करती है। सीता स्वयंवर से नारी की स्वतंत्रता और विवाह पद्धति का पता चलता है।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ तो उस युग के यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है। डॉ.सीमा गुप्ता महानगर को विशिष्ट अर्थो से प्रयुक्त करती हैं, उसके मतानुसार वे नगर जो अपने विकास के द्धारा राष्ट्रीय- अंतराष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण रूप से प्रभाव स्थापित कर लेते हैं, महानगर की परिभाषा में आ जाते हैं।

महानगरीय परिवेश में मनुष्य जीवन मशीनी यंत्र बन जाता है। गाँवों में जो आत्मियता, संवेदना, अपनापन और स्नेह होता हैए वही शहरों तक आते आते अजनबीपन, अकेलेपन, घृणा, असंवेदनशील दृष्टिगत होता है।

महानगरीय चकाचौंध व्यक्ति को आकर्षित करती है। अपनी परंपरा से कटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन करता जा रहा हैए जिससे शहरों की आबादी बढ़ती जा रही है। परिणामस्वरूप बेरोजगारी, प्रदूषण, महंगाई, गंदगी, यातायात की भीड़, आदि के साथ बढ़ते प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य के स्तर में भी गिरावट देखी जा रही है। हाएँ मनुष्य संबंधों को भभूलकर अधिकाधिक व्यवसायिक बन रहे हैं। पूंजीवाद सामाजिक व्यवस्था में क्रूर, स्वार्थी, कुटिल और असुरक्षित बनाती है। महानगरी परिवेश में आत्मकेन्द्रितता की भावना ने मनुष्य को अत्यधिक स्वार्थी बना दिया है।

महानगरों में पाश्चात्य सभ्यता के संक्रमण, अंधानुकरण, मशीनीकरण एवं फैशन परस्ती के परिणामस्वरूप अकेलेपन, घुटन, पीढ़ी में बढ़ती आंतरिक व्यवस्था, शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, महंगाई, राजनैतिक बदलते दुष्प्रभाव जैसे अप्राकृतिक और असांसारिक परिवेश बढ़ते हुए देख रहा है।

कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, यशपाल, महीपसिंह दूधनाथ आदि ने आधुनिक जिंदगी के दुष्प्रभावों को गहराई से महसूस किया है।

सामाजिक मूल्यों में धर्म का छद्म आवरण का आडंबर, चरित्र का दोगलापन, नकली मुखौटे का निदर्शन ऐसे तत्व है, जो प्रतियोगी भूलें उजागर करते हैं।

चित्रा जी ने अत्यंत उल्लेखनीय लेखन किया हैए जिसमें उन्होंने नारी के कारखानों में काम करने वाली स्त्रियों के संगठन से जुड़ी श्रमिक महिलाओं के हितों की रक्षा की है।

पेंटिंग अकेली है में 10 कहानी संग्रह हैं। जिसकी प्रसतावना में चित्रा मुद्गल कहती है कि- कहानी मेरी सर्वाधिक प्रिय विधा है और वह अब भी है। और विषय में उससे अलगाव की दूर-दूर तक कोई संभावना मुझे नजर नहीं आ रही। ये बात सही है कि लिखने का दबाव निर्मित करने और उस दबाव को जुनून में परिवर्तित करने का कौशल कहानियों में खूब आता है। शिल्प भी वह खुद तलाश कर लेती है। उसका आरंभ कैसे हो, यह वही तय करती है।

यह भी सदैव महसूस किया- कहानियों ने ही मुझे कहानियाँ बिनने के लिए प्रेरित किया है। मैं एकाएक महसूस करने लगती हूँ, दबे पाँव कहानी मेरी अभिव्यक्ति को अपनी भूमिका में सन्नद्ध होने के लिए ललकारने लगी है, प्रतिरोध का जज्बा स्वं आत्मसात किए हुए।

घर, देश, समाज, जाति, आर्थिक, राजनीतिक विसंगतियों हों या स्वयं को छलने पर आमादा व्यक्ति के निजी स्वार्थपरक व्यक्तिवादी अंध प्रवृत्ति, व्यवस्था की आंतडियों में पैठे चेहरे विहीन संक्रमणों में सेंध लगाती कहानी ने कही मुझसे मुँह नहीं फेरा।

शायद यह सच है कि कहानियाँ मेरे लिए सर्जना का वह प्रस्थान बिंदु हैए जहाँ से अन्ध विधाओं की चौखटों ने अपने कपाट खोले हैं।

नारी के प्रति पुरुषों के दृष्टीकोण में बदलाव नजर आने लगा है। विस्मय होता है- गुलाम भभारत को स्वतंत्र हुए आधी सदी गुजर जाने के बाद भी स्त्री के प्रति हमारे उन्नतिशील समाज का जड़ रवैया यथावत् है। आपसी समझ की आयातीत अवधारणा न तो स्त्री की दशा और दिशा बदलने में कोई सार्थक भूमिका अदा की है।

'साहित्य में स्वचेतना और स्त्री' आलेख में चित्रा मुद्गल कहती है कि 'दरअसल नारी चेतना की मुहीम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आंदोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ और अन्य मनुष्यं की भाँति समाज में सम्मानपूर्वक रहने की अधिकारी हूँ। उसे हमारी सुनिश्चित करना होगा कि वह अपनी स्मिता की लड़ाई खुद लड़े। उसकी सामाजिक छवि कैसी हो। नारी चेतना के लिए सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि देश में आधी आबादी की शेष चालीस प्रतिशत ग्रामीण आदिवासी स्त्रियाँ जिन प्रतिकूल परिस्थिति में रहकर जीवनापन कर रही है और अब तक वोट की राजनीति में रेड़की क्राँति हाँककर ले जाए जाने और पुरुषों के इशारों पर मतपत्र पर ठप्पा लगाने के लिए अभिशप्त है।

चित्रा मुद्गल कहती है कि सन् 2000 में मेरा ग्यारहवां कथा संकलन 'लपटें' प्रकाशित हुआ था। 'लपटें' कहानी 'उद्भावना' में प्रकाशित हुई थी। 'लपटे' के बाद 2004 में लघुकथा संग्रह 'बान' प्रकाशित हुआ।

चित्रा जी अपनी पुरानी यादों के संदर्भ में कहती है कि- 'ट्रेड यूनियन से मैं बहुत थोड़े समय के लिए जुड़ी रही।' लेकिन श्रमिक परिवारों से मेरा लंबा नाता रहा। मेरे घर के अहाते के बाहर चारों ओर मजदूर बस्तियों में कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि वहाँ तब बिजली के लट्टू नहीं, लालटेन और ढिबरियाँ जला करती थी। पाखाने के लिए ठेठ गाँव की भाँति मजदूर पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे लोटा लेकर तड़के 'लेवल डाककार्ड' कॉलोनी के पिछले हिस्से में फैले सघन जंगलों में जाया करते थे। इस प्रकार बंबई जैसी सघन बस्ती की दशा उन दिनों थीं।

ऐसी बस्ती में चित्रा जी को समय बीतता था। 17 फरवरी 1965 को पिता की इच्छा के विरुद्ध अवधनारायण मुद्गल से अन्तर्जातीय विवाह किया। पति मुद्गल जी उत्तरप्रदेश के आगरा जनपद की 'बाह' तहसील सेमनपुरा गाँव के ब्राह्मण परिवार से हैं। 15 अप्रैल 2015 में अवधनारायण जी इस

संसार से विदा हो गये।

'जागरण' में 1965 को 1972 तक सचिव के रूप् में कार्य किया। महिलाओं की संस्था 'स्याधार' में 1979 को 1983 तक कार्य किया। 1986 से 1990 तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंसाधन एवं प्रशिक्षण परिषद की 'वूमन स्टडीज यूनिट' की कई महत्वपूर्ण पुस्तक योजनाओं में निर्देशन के रूप् में कार्य किया सन् 1999 तक फिल्म सेंसर बोर्ड की मानद सदस्य रही।

महानगरीय परिवेश में पनप रही उपभोक्तावादी संस्कृति में उपयोगहीन वस्तु की तरह मानवीय संवेदनाहीन कहानी 'गेंद' नामक वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों की पीड़ा और विडम्बनाओं को अभिव्यक्ति दी।

इस प्रकार चित्रा जी ने जीवन की त्रासद एवं विसंगतिपूर्ण व्यथा की गहराई से महसूस किया। उन्होंने स्त्री जीवन की उत्पीड़न दुर्गति को देखा और महसूस किया।

चित्रा जी ने समाज की निम्नवर्गीय नारी की दशा, पुरुषों द्वारा किये जाने वाले शोषण को जानाद्य संपूर्ण जीवन के लिए समाज में नारी के पास कठिन परिश्रम के अलावा कुछ कहने योग्य व्यथा नहीं है।

चित्रा मुद्गल अपनी प्रस्तावना में ही कहती है कि में कलम लिखती हूँ? कलम से मेरा रिश्ता क्या है? उत्तर में वह लिखती है कि– 'रिश्ता बना तो कलम से ही क्यों बना? कैसे बना और कब ऐसा लगने लगा कि कलम' ही मेरे होने का पर्याय है। कल' से अलग होकर में चेतना शून्य काया–सी डोलती–फिरती, सवालों के बवंडर में ऊभ–चूभ होती संभवत: जीती तो होती, चलती फिरती मुर्दों की भीड़ का वैसा ही हिस्सा होती, जैसे हम में से बहुत से लोग होते है या होने को अभिशप्त होते हैं, या शायद वे इस बात से ही अनभिज्ञ होते हैं कि ऐसा होना और इस तरह से जीना उनके न होने के बराबर है।'

नींद से जागे बिना अपनी जड़ता से लड़ना संभव नहीं। स्त्री होकर तो विशेष रूप से नहीं। क्योंकि स्त्री जनमते ही उसके मुँह पर ताले जड़ दिये जाते हैं। ताले उसके मुँह पर नहीं जड़े जाते, मुँह के बहाने उसके मस्तिष्क पर लगाये जाते हैं। उन तालों को तोड़े बिना स्त्री अपनी चौतन्यता को अपनी आवाज में नहीं ढाल सकता' आवाज को शब्दों में नहीं रच सकती शब्द बहुत ढीठ होते हैं, कलम के भ्रूण में जब तक नहीं पकते औरों तक नहीं पहुंचते।

चित्रा मुद्गल ने ही अपनी कलम चलाना भली भाँति जान लिया है। एक दिन लड़की ने कल' उठाली अपने बप्पा को लिखने के लिए। उस लड़की ने अपनी आवाज को शब्दों के हवाले कर चिट्ठढायाँ लिखने शुरू की।

चित्रा मुद्गल लिखती है कि– 'चित्रा मुद्गल लिखती है कि 'जब उसने लिखना आरभंकर दिया था, तो आगे फिर अभी नहीं रूका।'

पुराने समय में लड़की का सुन्दर होना उसके विवाह के लिए कोई बाधक तत्व नहीं था। चित्रा मुद्गल की 'लाक्षागृह' में एक ऐसी लड़की का सच प्रस्तुत किया गया है जो असुन्दर होने के कारण अपनी बड़ी और छोटी बहनों के विवाह हो जाने पर अविवाहित है। वह नौकरी करती है और पूर्णत: आत्मनिर्भर है। उसकी सारी समस्या औरत होना है, क्योंकि विवाह के लिए औरत का सुन्दर होना जरूरी होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।

****